



जिलेट जो पीछे छोड़ जाती है

(उनकी नज़र से, जो फिर चल पड़ते हैं)

“क्लिनिक मरीज़ों का इलाज करता है। देखभाल करने वाला समुदाय लोगों को सहारा देता है।”

I. जो बचा रहता है

मैं मनोरंजन-कक्ष में था, उस कमरे में जो रोगियों के लिए खुला रहता है — दोपहर के आराम के लिए, सिगरेट के लिए, बातचीत के लिए — और हम साथ आने वालों के लिए भी, जो अपने बीमारों को घर वापस ले जाने का इंतज़ार करते हैं।

मैं बेचैन नहीं था, पर चौकन्ना था: यह देखते हुए कि बीमारी के भीतर इंसान कैसे नाजुक हो जाता है — ऐसी बीमारी जो अक्सर अपाहिज कर देती है और जिससे बच निकलने का कोई रास्ता नहीं, ऐसी बीमारी जो किसी की उम्र नहीं देखती।

पाँच मर्द थे और एक औरत, सब व्हीलचेयर पर बैठे हुए। वे मेरी तरफ़ मुड़े और पूछने लगे कि मेरी उम्र क्या है, मैं क्या काम करता हूँ, किन चीज़ों से मेरा वास्ता है, मेरा रुझान किस तरफ़ है; और आखिर में उन्होंने जानना चाहा कि राजनीति और धर्म के कुछ सवालों पर, और कुछ जानी-मानी हस्तियों के बारे में, मैं क्या सोचता हूँ।

उनकी आँखें बुझी हुई थीं, उस आदमी की आँखें जो बस रोशनी के गुल होने का इंतज़ार कर रहा हो। और मैंने, उलटे, वह रोशनी फिर जला दी।

लोगों के साथ होने का मेरा यही ढंग है: उनके चेहरे पर मुस्कान ले आना। मैं अभिनेता नहीं हूँ, न क्लिनिक का मसख़रा — बस बहुतों जैसा एक आदमी, पर रोटी जितना आम भी नहीं।

फिर उन्होंने मुझसे एक क्रिस्सा माँगा। और यहाँ मुझे पाठक के साथ ईमानदार रहना होगा: जो क्रिस्सा मैंने सुनाया वह कोई शरीफ़ाना चुटकुला नहीं था, और किसी और जगह मैं उसे सुनाता भी नहीं। पर वहाँ, उस कमरे में, ज़िंदगी ने उनसे जो छीन लिया था उस पर हँसने की इजाज़त वे ही दे सकते थे, खुद को। और उन्होंने मुझसे वही माँगा। इसलिए मैं उसे वैसा ही दर्ज कर रहा हूँ जैसा वह था, क्योंकि उसे पूरी तरह धो-पोंछ देना उनके साथ दगा करना होगा।

मैं आपको सुनाता हूँ — मैंने कहा — व्हीलचेयर पर बैठे एक आदमी का क्रिस्सा, जिसके न हाथ थे न पैर, और जिसने एक दिन किसी डेटिंग साइट के एक विज्ञापन का जवाब दिया।

और अगर कोई न मुस्कुराए, मैंने जोड़ा, तो क़सूर मेरा नहीं: इसका मतलब बस इतना होगा कि आज उसका दिन नहीं है।

एक बहुत अमीर औरत, काफ़ी उम्रदराज़ — अस्सी के आसपास — अपनी पैंतालीस साल की भतीजी की मदद से पति ढूँढ़ रही थी। पर ज़िंदगी ने उसे जो कुछ सिखाया था, उसके बाद उसे साफ़ पता था कि उसे कैसा मर्द चाहिए: ऐसा जो कभी हाथ न उठाए, ऐसा जो घर पर ही रहे, और — यूँ कह लीजिए — जिसे कुदरत ने दिल खोलकर दिया हो।

दरवाज़े पर दस्तक हुई। सामने उसने इसी आदमी को पाया, क्लीनचेयर पर, बिना हाथों और बिना पैरों का, पर जवान और ख़ूबसूरत, जो विज्ञापन के जवाब में उम्मीदवार बनकर आया था।

उसने उसका इंटरव्यू लिया।

उसे ऐसा मर्द चाहिए था जो कभी हाथ न उठाए: और इसके हाथ ही नहीं थे। पहला अंक उसके हक़ में।

उसे घर से लगाव रखने वाला, शांत मर्द चाहिए था: और यह बिना पैरों का था, अपनी कुर्सी पर। दूसरा अंक उसके हक़ में।

और आख़िर में उसने उससे कहा कि उसे ऐसा मर्द चाहिए जिसे कुदरत ने भरपूर दिया हो। और उस आदमी ने, पूरी संजीदगी से, जवाब दिया: “मैडम... तो आपको क्या लगता है, मैंने दरवाज़ा किस चीज़ से खटखटाया?”

इस पर पाँचों मर्द ठहाका मारकर हँस पड़े, और उनकी हँसी रुक ही नहीं रही थी। पर वह औरत संजीदा रही, निर्विकार। और मेरा सारा ध्यान उसी की तरफ़ चला गया।

उसके लिए मेरे पास कोई दूसरा रूप नहीं था, मैंने कुछ तैयार नहीं किया था। पर अचानक एक बात सूझी: मैंने उससे कहा कि वह चाहे तो मैं उसे उस उम्मीदवार का फ़ोन नंबर दे दूँगा। उसकी आँखें चमक उठीं, वह मुस्कुराई, और बोली: हाँ, हाँ।

मैंने उससे एक मुस्कान जीत ली थी। मैं अपनी मंज़िल तक पहुँच गया था। उस पल का बस इतना ही बचा — और इतना काफ़ी था।

जब मैं वहाँ से निकला, तो सबने पूछा कि मैं फिर कब आऊँगा, और क्या मेरे पास और क्रिस्से हैं।

II. उपसंहार

लोग मानते हैं कि जो बचा रहता है वह एक मेडिकल फ़ाइल है, एक एक्स-रे, घर पर जारी रखा जाने वाला कोई इलाज, या काग़ज़ के टुकड़े पर जल्दबाज़ी में घसीटा हुआ एक फ़ोन नंबर।

वे ग़लत हैं।

जब कोई इंसान ऐसी जगह से निकलता है, तो जिन चीज़ों से उसका इलाज हुआ उनमें से वह लगभग कुछ भी साथ नहीं ले जाता।

वह लोगों को साथ ले जाता है।

आवाज़ों को साथ ले जाता है।

आदतों को।

गलियारों को।

समय-सारणियों को।

उन चेहरों को, जो हफ्तों तक, या महीनों तक, उसकी ज़िंदगी का वक़्त नापते रहे।

दवा-इलाज अभिलेखागार में रह जाता है।

याद दूसरा रास्ता पकड़ती है।

और मैं उसी याद की बात करना चाहता हूँ।

III. लेखक-पृष्ठ

यह रचना किसी के कहने पर नहीं लिखी गई।

इसे बेचा नहीं गया।

यह किसी व्यावसायिक मक़सद से नहीं बनाई गई।

यह पुनर्वास के, मानवीय गरिमा के और लोगों के आपसी रिश्ते के मूल्य की गवाही देने के लिए लिखी गई।

माँगा गया एकमात्र मेहनताना एक प्रतीकात्मक डॉलर है — रचना की कीमत के तौर पर नहीं, बल्कि देखभाल, उम्मीद और ज़िम्मेदारी की संस्कृति के प्रति साझा प्रतिबद्धता के साक्ष्य के तौर पर।

फर्दिनांदो